IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13736

अनर्घराघवम् नामक नाट्य-कृति में वर्णित रामायणकालीन संस्कृति का दार्शनिक अनुशीलन

डॉ. कीर्ति कुमार त्रिपाठी[1], कीर्ति तिवारी[2]

निर्देशक-सहायक प्राध्यापक-संस्कृत, यमुना प्रसाद शास्त्री, महाविद्यालय, सिरमौर (म.प्र.)[1]

शोधार्थी-संस्कृत विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[2]

सारांश:

नाटक को काव्य का सर्वाधिक रमणीय रूप माना गया है, जैसा कि प्रसिद्ध उक्ति है। 'नाट्यशास्त्र' के प्रवर्तक भरतमुनि ने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के लगभग रचित अपने महान ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' के 36 अध्यायों में नाट्य सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रामाणिक एवं व्यापक विवेचन प्रस्तुत किया। उन्होंने घोषणा की कि संसार में ऐसा कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग या कर्म नहीं है जो नाटक में प्रतिबिंबित न होता हो। नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय के श्लोक में भरतमुनि नाटक के महत्व का विस्तार से वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह केवल धर्म और देवताओं की चर्चा नहीं करता, बल्कि संसार के समस्त भावों और अनुभवों का चित्रण करता है। इसमें धर्म, मनोरंजन, हास्य, युद्ध, श्रम, प्रेम तथा जीवन के प्रत्येक पक्ष का वर्णन है। नाटक धनवानों के लिए मनोरंजन, दुःखियों के लिए सांत्वना, पेशेवरों के लिए आजीविका का साधन तथा व्याकुल लोगों के लिए शांति का स्रोत है। मुरारि के नाटक अनर्घराघवम् का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण पूर्ण करने के लिए नैतिक मूल्य, व्यावहारिक आचरण, चातुर्वर्ण व्यवस्था, चतुराश्रम व्यवस्था तथा पुरुषार्थ चतुष्टय को सम्मिलित करके कहा जाता है। यह विविध अध्ययन क्षेत्रों में एक मूल्यवान स्रोत सिद्ध होगा। इस शीर्षक के अंतर्गत किया गया। महर्षि वाल्मीकि की 'रामायण' और मुरारि के अनर्घराघवम् में भगवान श्रीराम के चरित्र-चित्रण के अंतर को भी उद्घाटित करेगा, जिससे साहित्य और समाज को नई चेतना प्राप्त होगी। यह भी स्पष्ट करेगा कि सहस्रार्जुन का वध भगवान के किस हाथ द्वारा नियत थाकृएक ऐसा बिंदु जिसे अब तक स्पष्ट रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया है। जब भगवान श्रीराम परशुराम से संवाद करते हैं, तब वे अत्यंत विनम्रता के साथ दृढ़ता व्यक्त करते हुए सूक्ष्म रूप से अपने पराक्रम का संकेत देते हैं, जिससे साहित्यिक अनुसंधान का एक नया क्षेत्र उद्घाटित होता है। मुरारि ने नाटकीय भाषा में उन पक्षों को अत्यंत कुशलता से प्रस्तुत किया है, जिनका उल्लेख 'वाल्मीकि रामायण' में तो है, किंतु मानव समाज के कल्याण के लिए उन्हें स्पष्ट रूप से जनसामान्य के समक्ष नहीं लाया गया था।

मुख्य शब्द: मानव, नैतिक, शिखरस्थ, अन्वेषण, जीवन मूल्य आदि।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र मंे अनर्घराघवम् नामक नाट्य-कृति में वर्णित रामायणकालीन संस्कृति का दार्शनिक अनुशीलन प्राथमिक एवं द्वितीय शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में साक्षात्कार, विद्वानों का मार्गदर्शन एवं द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अध्ययन किया गया है। मुख्यतः विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, उपयुक्त विधियों का उपयोग किया जाएगा।

समस्या

राजनीतिक षड्यंत्र, तथा रामायण पर कुछ भ्राँतियों को आरोपित करना सत्तात्मक-संघर्ष की समस्या को उजागर करता है। यहाँ तक की कुछ धार्मिक और सांस्कृतिक संघर्ष ताड़का-वध, तथा दिव्य अस्त्रों का प्रयोग यह दर्शाता है कि उस युग का केंद्रीय प्रश्न धर्म और अधर्म के बीच का संघर्ष रहा है। सामाजिक असमानता समाज में वर्ग-भेद और सांस्कृतिक दूरी विद्यमान थी। राम का वनवास, सीता का हरण, तथा युद्ध के प्रसंग बार-बार धर्म का पालन करने और व्यक्तिगत सुख की प्राप्ति के बीच के संघर्षात्मक अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करते हैं।

उद्देश्य

मुरारि का काव्य अत्यंत अलंकारपूर्ण और विद्वत्तापूर्ण है, जिसके कारण लोक मानस के लिए उसे समझना कठिन हो जाता है। इस हेतु प्रयास किया जाना चाहिए कि लोग साहित्यिक भाषा को साधारण भाषा में अभिव्यक्ति का माध्यम से होने से लोगों को आसानी से समझ आ जायेगा। यह भी एक प्रकार की सांस्कृतिक समस्याओं का प्रश्न लोगों में व्याप्त रहा है। उस प्रश्न का निदान करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

 This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13736

समाधान

अनर्घराघवम् मुरारि द्वारा रचित एक अद्वितीय संस्कृत नाट्यकृति है, जिसमें रामायण-युग की संस्कृति और दार्शनिक अन्वेषण अलंकृत साहित्यिक शैली में किया गया है। यह कृति धर्म, धार्मिकता, सामाजिक समरसता तथा आदर्श की अवधारणाओं को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है।1 वाल्मीकि रामायण की कथा को सांस्कृतिक मूल्यों को उजागर करने के उद्देश्य से नाटकीय रूप में पुनः प्रस्तुत किया गया है। अलंकृत साहित्यिक में शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का प्रयोग धर्म तथा नैतिक आचरण के आदर्शों को सौंदर्यपूर्ण अभिव्यक्ति को प्रदान किया जाता है।2 नाटक और समाज यह कृति दर्शाती है कि उस युग में नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक शिक्षा का ही माध्यम है। रामायण-युग की संस्कृति का दार्शनिक अन्वेषण धर्म और धर्मानुकूल आचरण राम का वनवास, ताड़का-वध तथा सीता का 'स्वयंवर' जैसे प्रसंग धर्मपालन और नैतिक मर्यादा के आदर्शों को प्रतिपादित करते हैं।3 सामाजिक वर्ग की सीमाओं से परे सहयोग तथा मैत्री के आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है। रामराज्य की अवधारणा न्याय, समानता और लोककल्याण पर आधारित आदर्श शासन-व्यवस्था का प्रतीक मानी जाती है। जीवन के संघर्षों के बीच धर्म और नैतिक सिद्धांतों का पालन ही सांस्कृतिक चेतना की आधारशिला है।4

अनर्घराघवम् संस्कृत नाट्य साहित्य के क्षेत्र में विश्वविख्यात नाटककार मुरारि की विशिष्ट कृति है। यह धर्म के मूर्त स्वरूप भगवान श्रीराम के सामाजिक एवं मानवीय आदर्शों पर आधारित है। नाटककार की शैली अत्यंत परिपक्व है, जो संक्षिप्त रूप में व्यापक विचारों की अभिव्यक्ति के सिद्धांत का अनुसरण करती है। जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, 'अनर्घ' का अर्थ है अमूल्य जिसका मूल्यांकन संभव न हो। अतः भगवान श्रीराम का चरित्र और व्यक्तित्व अमूल्य एवं सर्वथा अतुलनीय है।5 श्रीराम का आदर्श सर्वोच्च, समाज और राष्ट्र के लिए हितकारी है, और लोगों को अपने जीवन को सार्थक तथा राष्ट्रोपयोगी बनाने के लिए उसका अनुकरण करना चाहिए। इस प्रकार 'अनर्घराघवम्' उच्च कोटि की कृति है। 'भागवत पुराण' में भी कहा गया है कि वही श्रेष्ठ रचना है जो भगवान की दिव्य लीलाओं का उद्घाटन करे, क्योंकि सज्जन पाठक साधारण कृतियों में आनंद नहीं लेते, जैसे मानसरोवर के हंस किसी अन्य स्थान के लिए मानसरोवर का परित्याग नहीं करते। भारतीय परंपरा में 'नाट्यशास्त्र' के प्रवर्तक भरतमुनि नाटक की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सभी देवताओं ने ब्रह्मा से ऐसा मनोरंजन का साधन बनाने का अनुरोध किया जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो तथा चारों वर्णों के लिए सुलभ हो। इसके उत्तर में ब्रह्मा ने ऋग्वेद से संवाद, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से संगीत तथा अथर्ववेद से रस लेकर पाँचवें वेद 'नाट्यवेद' की रचना की।6 ऋग्वैदिक संवाद-सूक्त सिद्धांत के समर्थकों के अनुसार संस्कृत नाटक की उत्पत्ति ऋग्वेद के नाटकीय संवाद-सूक्तों से हुई, जैसे इन्द्र और मरुतों का संवाद, अगस्त्य और लोपामुद्रा, विश्वामित्र और नदियाँ, वसिष्ठ और सुदास, यम और यमी, इन्द्राणी और वृषाकपि, पुरूरवा और उर्वशी तथा सरमा और पणियों के संवाद। इसी प्रकार 'रासलीला' सिद्धांत नाटक की उत्पत्ति भगवान श्रीकृष्ण की भक्तिमय 'रासलीला' प्रस्तुतियों से मानता है। इन विभिन्न सिद्धांतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नाटक के सभी प्रमुख तत्त्व वैदिक साहित्य में विद्यमान हैं। इसलिए भरतमुनि ने 'नाट्यवेद' को "चारों वेदों से उत्पन्न" कहा है। महर्षि वाल्मीकि की 'रामायण' तथा 'महाभारत' के अध्ययन से ज्ञात होता है कि रामायण काल तक नाटक प्रचलित हो चुका था और निरंतर विकसित हो रहा था।7 'वाल्मीकि रामायण' के निम्नलिखित श्लोकों में नाटक, अभिनेता और नर्तकों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। कुछ लोग शांति से वाद्य बजाते हैं; अन्य नृत्य करते हैं। कुछ लोग नाटक और विविध प्रकार के हास्य-प्रदर्शन करते हैं। राजा-विहीन राज्य में कुशल अभिनेता और नर्तक उन्नति नहीं करते। इसी प्रकार वेदव्यास-रचित 'महाभारत' में सूत्रधार, अभिनेता और नर्तकों का उल्लेख इस प्रकार मिलता हैं। इस प्रकार सूत्रधार ने कवियों, कथावाचकों और रचनाकारों के साथ कहा। 'महाभारत' के 'विराट पर्व' में नाट्यशाला का उल्लेख मिलता है, और 'हरिवंश पर्व' में असुर वज्रनाभ की नगरी में 'रामायण' नाटकों के मंचन का वर्णन है। संस्कृत साहित्यशास्त्रियों ने काव्य को दो भागों में विभाजित किया है। दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य। दृश्य काव्य में 'रूपक' (नाटक) तथा 'उपरूपक' (लघु नाट्य रूप) सम्मिलित हैं, जबकि श्रव्य काव्य में महाकाव्य और लघु आख्यानात्मक काव्य आते हैं। जिन साहित्यिक कृतियों का अभिनय के माध्यम से दर्शकों के समक्ष मंचन किया जा सकता है, उन्हें 'रूपक' कहा जाता है, क्योंकि अभिनय के समय कलाकार नाट्य पात्रों का रूप धारण करते हैं। 'रूपक' के दस भेद 'नाटक', 'प्रकरण', 'भाण', 'व्यायोग', 'समवकार', 'डिम', 'ईहामृग', 'अंक', 'वीथी' और 'प्रहसन'कमें प्रथम 'नाटक' है।

निष्कर्ष

मुरारि की एकमात्र कृति, 'अनर्घराघवम्', महाकवि माघ की भाँति उनकी अक्षय कीर्ति का कारण बनी। 'शार्ङ्गधरपद्धति' में कहा गया है। रामायण-आधारित साहित्य पर अनेक शोध कार्यों का अध्ययन करने तथा समकालीन मानव समाज के नैतिक आचरण एवं व्यवहार में हो रहे परिवर्तनों का अवलोकन करने के पश्चात्य, शोधकर्ता रामायणकालीन संस्कृति और चेतना के पुनर्जागरण के उद्देश्य से अनर्घराघवम् नामक काव्य-नाटक पर शोध करने का प्रयास कर रहा है। नाट्य साहित्य की परंपरा में शिखरस्थ माने जाने वाले अत्यंत प्रशंसित नाटक अनर्घराघवम् की नाट्य-शैली का अन्वेषण करना, उसके गूढ़ तत्त्वों का संरक्षण करना, मानव जीवन के लिए स्वीकार्य नैतिक मूल्यों एवं आचरण-पद्धतियों का अध्ययन करना तथा उन आदर्शों के अनुरूप जीवन का संवर्धन करके समाज को नई दिशा प्रदान करना है।

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13736

सन्दर्भ

[1]. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, (2020), 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', रामनारायण लाल विजय कुमार, प्रयागराज, पृष्ठ 86
[2]. डॉ. रामकुमार राय (1965), 'वाल्मीकि रामायण कोश', साहित्य संस्थान, प्रयागराज (उ.प्र.), पृष्ठ 25
[3]. श्री व्यास शांति कुमार (1988), 'वाल्मीकि रामायण', भाग प् एवं प्प्, दिल्ली, पृष्ठ 55
[4]. श्री शोभनाथ मिश्र (1988), 'वाल्मीकि और कालिदास का काव्य-कौशल', नई दिल्ली, पृष्ठ 33
[5]. श्री शिवबालक राय (1988), 'वाल्मीकि रामायण और काव्य विश्लेषण', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृष्ठ 15
[6]. डॉ. मंजुला साहदेव (1967), 'वाल्मीकि रामायण एवं संस्कृत नाटकों में रस', विमल प्रकाशन, गाज़ियाबाद, पृष्ठ 38
[7]. डॉ. रामप्रकाश अग्रवाल (1966), 'वाल्मीकि और तुलसी', प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ, पृष्ठ 36